कपास से लेकर पतलून तक

अली मिटगुत्स्चो

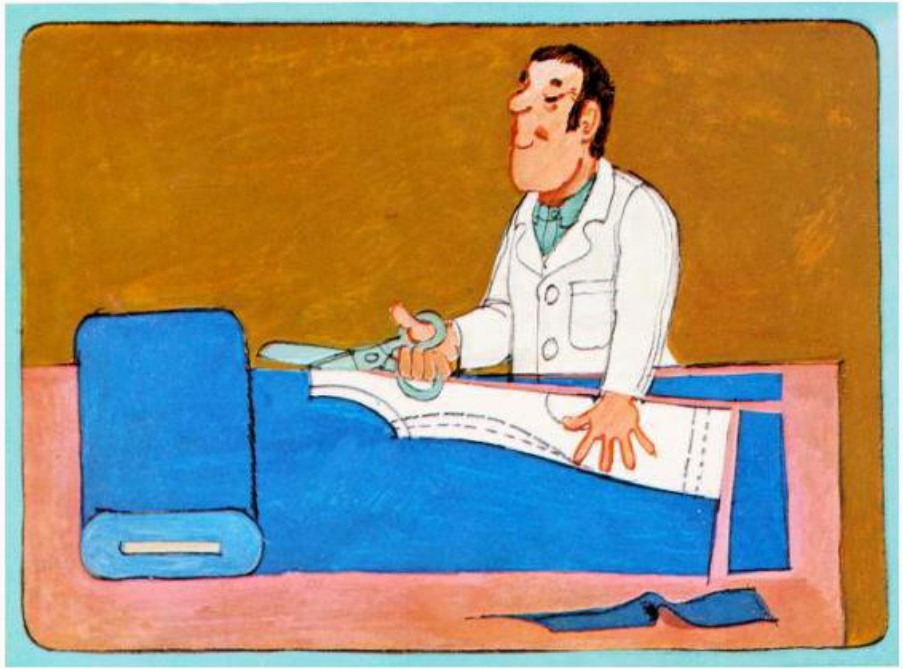

कपास से लेकर पतलून तक

कपास से लेकर पतलून तक

कपास पौधों पर सफ़ेद गुच्छों में उगती है जिन्हें "बोल्स" कहा जाता है.

जब कपास पक जाती है, तो फिर मज़दूर या मशीनें प्रत्येक पौधे के "बोल्स" को तोड़ते हैं.

प्रत्येक "बोल्स" में कपास के रेशों के साथ बीज होते हैं और आमतौर पर कुछ भी गंदगी होती है.

इससे पहले कि कपास के रेशों से धागे बनाए जा सकें, उन्हें साफ करना होता है.

कपास के रेशों को "कॉटन जिन" नामक एक बड़ी मशीन में डाला जाता है.

"कॉटन जिन" कपास के रेशों से बीज और अन्य गंदगी को अलग करती है.

फिर साफ रेशों को कताई मिल में ले जाया जाता है जहां मशीनें उन्हें घुमाकर धागा बनाती हैं.

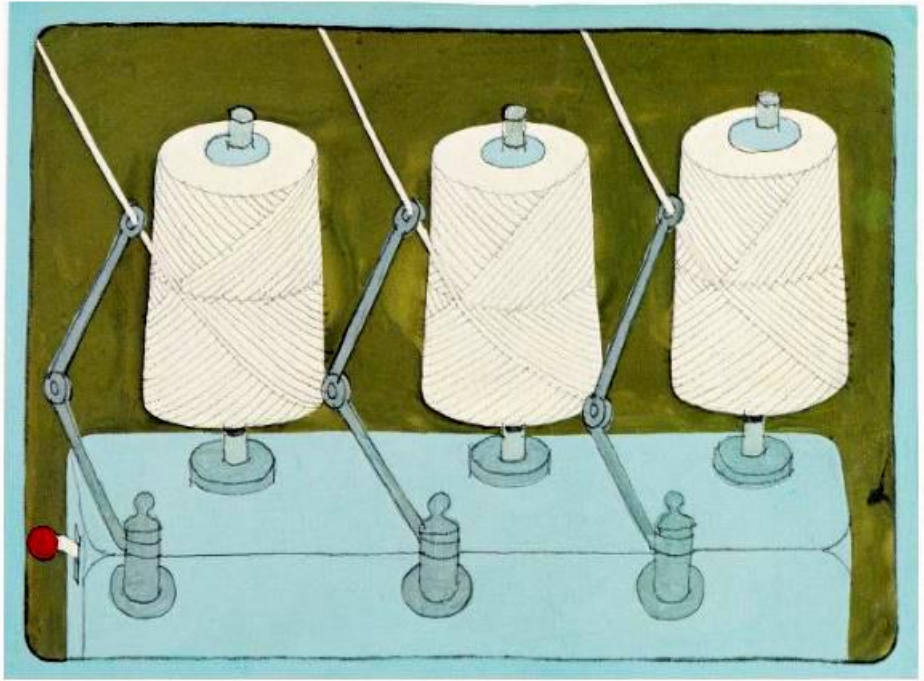

सूती धागे को अब कपड़े में बुना जा सकता है.

करघा (लूम) नामक मशीन पर कई धागों को साथ-साथ फैलाया जाता है.

फिर अन्य धागे अगल-बगल के धागों के ऊपर-नीचे बुने जाते हैं.

मजबूत, चिकना कपड़ा बनाने के लिए धागों को एक साथ बहुत कसकर बुना जाता है.

विभिन्न रंगों के धागों का उपयोग करके, कपड़े में कोई डिज़ाइन बुना जा सकता है.

सफ़ेद कपड़े को रंगा जा सकता है.

या उस पर एक डिज़ाइन के ठप्पे लगाए जा सकते हैं.

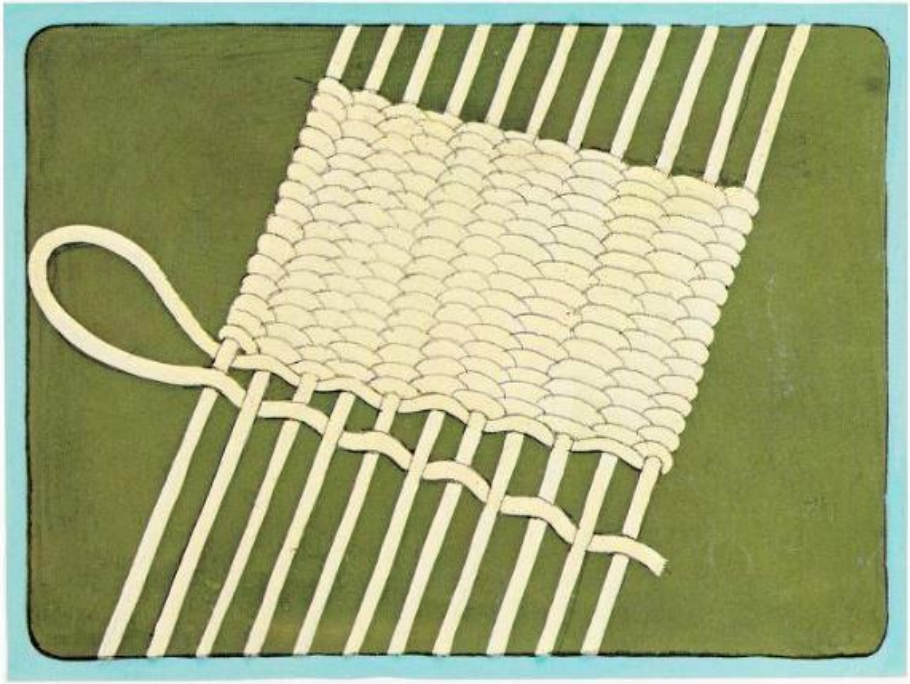

तैयार कपड़े को, गत्ते के भारी और मज़बूत टुकड़ों के चारों ओर लपेटा जाता है.

इन रोल्स को "बोल्ट" या "थान" कहते हैं.

फिर इन थानों को ट्रक में लादकर एक कपड़े के कारखाने में ले जाया जाता है.

कपड़े की फैक्ट्री में कई तरह के कपड़ों के पैटर्न होते हैं.

पैटर्न विभिन्न आकारों में आते हैं जिससे सभी लोगों के लिए अलग-अलग माप के कपड़े बनाए जा सकें.

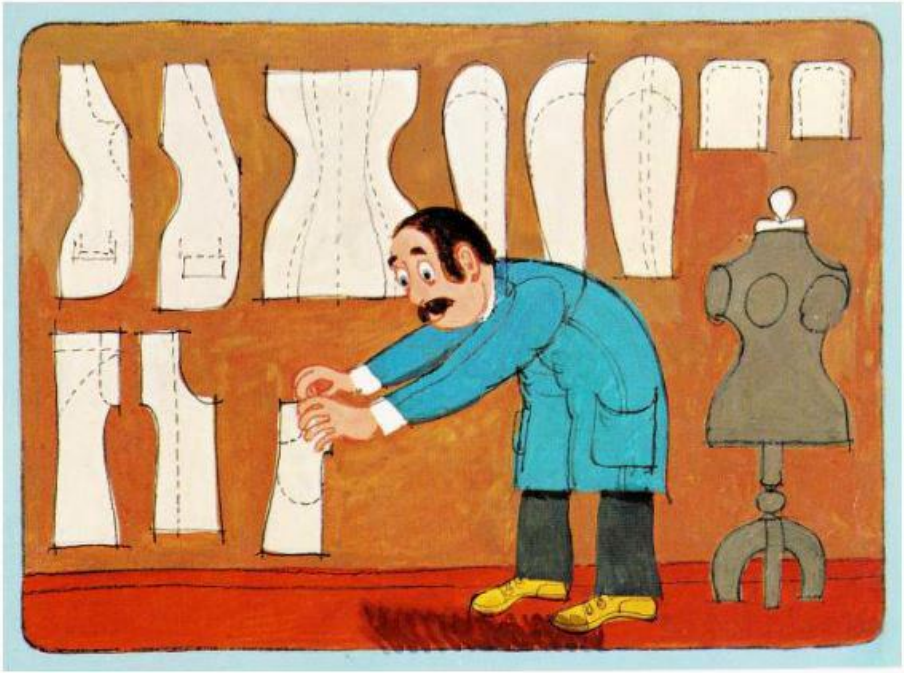

कटर, नीले कपड़े का एक थान खोलता है.

वो उसके ऊपर एक पैटर्न रखता है.

पैटर्न उसे दिखाता है कि उसे कहाँ काटना है.

क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वो क्या काट रहा है?

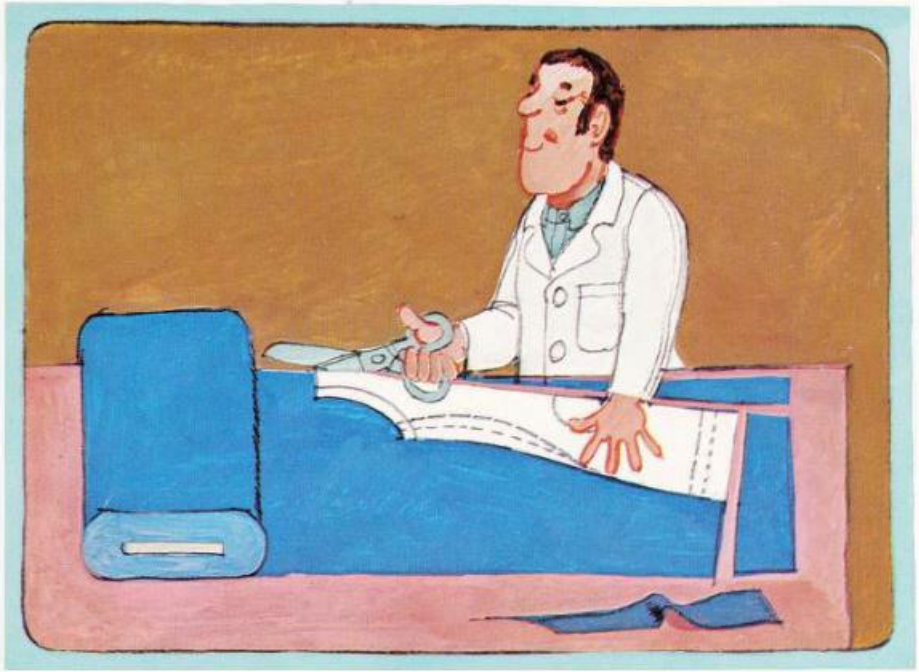

फिर कपड़ों के टुकड़ों को सावधानी से एक साथ सिला जाता है.

दर्जिन बिल्कुल पैटर्न की सीध में ही सिलाई करती है.

वो जेब, काज़ और बेल्ट के लूप भी सिलती है.

अंत में तैयार पैंट बेचने के लिए दुकान में भेजी जाती है.

ये बच्चे सूती कपड़े से बनी पैंट पहनकर खेल रहे हैं.

कॉटन की पैंट मजबूत होती है और उसकी देखभाल करना भी आसान होता है.

वो नरम और आरामदायक भी होती है!

समाप्त